अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

नासिरा शर्मा और कृष्णा सोबती की कहानियों में नारी विमर्श: तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती जीतबाला, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

सारांश

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श एक सशक्त धारा के रूप में विकसित हुआ है, जिसमें स्त्री के अस्तित्व, संघर्ष और स्वतंत्रता के प्रश्न प्रमुख हैं। नासिरा शर्मा और कृष्णा सोबती की कहानियाँ इस विमर्श को विशेष गहराई और विविधता प्रदान करती हैं। नासिरा शर्मा अपनी कहानियों में स्त्री के सामाजिक-राजनीतिक संघर्ष, घरेलू जीवन की विसंगतियों और पितृसत्ता से जूझने की जिजीविषा को उभारती हैं। दूसरी ओर, कृष्णा सोबती स्त्री के भावनात्मक संसार, उसकी इच्छाओं, संवेदनाओं और आत्मनिर्णय की आकांक्षाओं को अपनी कहानियों का केंद्र बनाती हैं। तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहाँ नासिरा शर्मा का दृष्टिकोण व्यापक सामाजिक संदर्भों से जुड़ा हुआ है, वहीं कृष्णा सोबती का लेखन स्त्री की आंतरिक अस्मिता और आत्मस्वर को अधिक महत्व देता है। इस प्रकार, दोनों लेखिकाएँ अलग-अलग दृष्टियों से स्त्री चेतना को अभिव्यक्त करती हैं, किंतु दोनों का योगदान नारी विमर्श को समृद्ध करने और हिंदी साहित्य को नई दिशा देने में समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

संकेत शब्द:- नारी विमर्श, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, स्त्री अस्मिता, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श का इतिहास गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों से जुड़ा रहा है, जहाँ स्त्री के अस्तित्व, संघर्ष और आत्मस्वर को केंद्र में रखकर अनेक लेखिकाओं ने अपने रचनात्मक अवदान दिए हैं। इस क्रम में नासिरा शर्मा और कृष्णा सोबती का कथा-साहित्य विशेष महत्व रखता है क्योंकि दोनों लेखिकाओं ने स्त्री की अस्मिता, स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से उद्घाटित किया है। नासिरा शर्मा की कहानियाँ प्रायः सामाजिक यथार्थ, वर्गीय असमानताओं और स्त्री की बहुआयामी समस्याओं पर केन्द्रित होती हैं, जिनमें घरेलू हिंसा, विवाह संस्था की विसंगतियाँ, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताएँ और आत्मनिर्णय का प्रश्न प्रमुख रूप से उभरता है। वे स्त्री को केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि अपनी शर्तों पर जीवन जीने वाली सक्रिय हस्ती के रूप में प्रस्तुत करती हैं। दूसरी ओर, कृष्णा सोबती की कहानियाँ स्त्री की संवेदनात्मक दुनिया, उसकी इच्छाओं, आकांक्षाओं और सामाजिक ढांचे के भीतर उसके प्रतिरोध को बड़े ही गहन और कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

करती हैं। उनकी लेखनी में स्त्री की देह और मन, दोनों की स्वायत्तता का आग्रह दिखाई देता है, जो पारंपरिक नैतिकताओं और पितृसत्तात्मक बंधनों को चुनौती देता है। यदि नासिरा शर्मा का लेखन सामाजिक-राजनीतिक चेतना से संचालित होता है तो कृष्णा सोबती का लेखन स्त्री की मनःस्थितियों, संवेदनाओं और आत्मस्वर को अधिक गहराई से उद्घाटित करता है। दोनों ही लेखिकाएँ स्त्री-विमर्श के विभिन्न आयामों को उद्घाटित करते हुए समाज के ढाँचे पर सवाल खड़ा करती हैं और स्त्री की स्वतंत्र सत्ता को रेखांकित करती हैं। तुलनात्मक अध्ययन में स्पष्ट होता है कि जहाँ नासिरा शर्मा स्त्री के संघर्ष को व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखती हैं, वहीं कृष्णा सोबती स्त्री के आंतरिक संसार और उसकी अस्मिता को अधिक महत्व देती हैं।"1 इस प्रकार, इनकी कहानियाँ नारी चेतना के दो अलग-अलग आयामों को सामने लाती हैं, जो हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के साथ-साथ स्त्री विमर्श को भी नई दिशा प्रदान करती हैं।

नासिरा शर्मा अपनी कहानियों में स्त्री के संघर्ष को सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में रखकर चित्रित करती हैं, जबकि कृष्णा सोबती स्त्री की संवेदनात्मक गहराइयों और उसकी आत्मस्वीकृति पर बल देती हैं। आज के समय में, जब नारी अस्मिता, स्वतंत्रता और अधिकारों को लेकर विमर्श निरंतर विस्तार पा रहा है, तब इन दोनों लेखिकाओं के स्त्री-दृष्टिकोण को तुलनात्मक धरातल पर समझना अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

स्त्री विमर्श की भारतीय साहित्यिक पृष्ठभूमि

भारतीय साहित्य में स्त्री विमर्श का उद्भव लंबे सामाजिक-सांस्कृतिक संघर्षों और परिवर्तनकारी आंदोलनों के बीच हुआ है, जिसकी जड़ें प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य तक फैली हुई हैं। वेदों और उपनिषदों में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियों की उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि भारतीय परंपरा में स्त्री ज्ञान और विचार-विमर्श की धारा का हिस्सा रही है, किन्तु कालांतर में पितृसत्ता और सामाजिक रूढ़ियों ने स्त्री को गृहस्थ जीवन, दायित्वों और त्याग की परिधि तक सीमित कर दिया। मध्यकालीन भक्ति साहित्य में मीराबाई, लल्देदी, अक्का महादेवी जैसी संत कवयित्रियों ने स्त्री की आत्मा और भावनाओं को स्वर दिया और भक्ति को स्वतंत्रता व आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। आधुनिक युग में राष्ट्रीय पुनर्जागरण और सामाजिक सुधार आंदोलनों के साथ स्त्री शिक्षा, स्त्री अधिकार और समानता के प्रश्न साहित्य में महत्वपूर्ण विषय बने।"2. भारतेंदु हरिश्चंद्र, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद और अन्य कवि-लेखकों ने स्त्री को नई दृष्टि से चित्रित करना शुरू किया, लेकिन स्वतंत्रता के बाद के साहित्य में स्त्री विमर्श ने अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर रूप ग्रहण किया। विशेषकर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के दौर में स्त्री पात्र सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगे। साठोत्तर हिंदी साहित्य में जब दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य और स्त्री साहित्य समानांतर धाराओं के रूप में उभरे, तब स्त्री विमर्श ने स्वयं को स्पष्ट रूप से एक स्वतंत्र विमर्श के रूप में स्थापित किया। इसमें स्त्री को केवल पीड़ित या करुण पात्र नहीं, बल्कि विद्रोही, संघर्षशील और आत्मनिर्भर सत्ता के रूप में चित्रित किया गया। समकालीन महिला लेखन, जिसमें कृष्णा सोबती, नासिरा शर्मा, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, अनामिका, कुमुद शर्मा आदि लेखिकाएँ प्रमुख हैं, ने स्त्री की अस्मिता, उसकी इच्छाओं, यौनिकता, स्वतंत्रता और पितृसत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध को केंद्र में रखा। इस पृष्ठभूमि से स्पष्ट होता है कि भारतीय साहित्य में स्त्री विमर्श केवल पश्चिमी नारीवादी चिंतन का आयात नहीं है, बल्कि भारतीय समाज के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों से निकला हुआ एक सशक्त और मौलिक विमर्श है, जिसने साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया और स्त्री को उसकी खोई हुई अस्मिता लौटाने का कार्य किया।"3

आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का उद्भव और विकास

आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का उद्भव 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में हुआ, जब सामाजिक सुधार आंदोलनों, राष्ट्रीय पुनर्जागरण और स्त्री शिक्षा के प्रसार ने स्त्री को समाज में नई पहचान दिलाने की प्रक्रिया आरंभ की। भारतेंदु युग में जहाँ स्त्री को आदर्श गृहिणी और त्यागमूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया, वहीं द्विवेदी युग में स्त्री-शिक्षा, दहेज-प्रथा, बाल विवाह और पर्दा प्रथा जैसे प्रश्नों को साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बनाया गया। छायावाद काल में महादेवी वर्मा ने स्त्री के अंतर्मन, उसकी पीड़ा और संवेदनाओं को गहरी अभिव्यक्ति दी, जबकि प्रसाद और निराला जैसे कवियों ने भी स्त्री की गरिमा और स्वतंत्र अस्तित्व को मान्यता दी। प्रगतिवाद और नई कहानी आंदोलन ने नारी विमर्श को यथार्थवादी और सामाजिक धरातल पर स्थापित किया। मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव आदि लेखकों ने स्त्री की सामाजिक स्थिति, वैवाहिक जीवन की जटिलताओं और पुरुषप्रधान समाज में उसके संघर्षों को सामने रखा। 1960 और 1970 के दशकों में स्त्री लेखन ने स्वतंत्र स्वर ग्रहण किया, जहाँ कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान और नासिरा शर्मा जैसी लेखिकाओं ने स्त्री की अस्मिता, यौनिकता, स्वतंत्रता और विद्रोह को कथानक का केंद्र बनाया। स्त्री अब केवल परिवार या समाज की परिधि में सीमित न रहकर अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और अधिकारों के साथ साहित्य के केंद्र में आई।"4 उत्तर-आधुनिक युग में स्त्री विमर्श का स्वर और भी व्यापक हुआ, जिसमें दलित और आदिवासी स्त्रियों के संघर्ष, वर्गीय और जातीय शोषण तथा वैश्विक स्तर पर स्त्रियों की समस्याएँ भी साहित्य का हिस्सा बनीं। समकालीन हिंदी साहित्य में नारी विमर्श

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

केवल लैंगिक असमानताओं के प्रतिरोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने स्त्री को एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में स्थापित किया जो समाज में सक्रिय हस्तक्षेप करती है। इस प्रकार, आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का विकास स्त्री को करुण पात्र से सशक्त, आत्मनिर्भर और परिवर्तनकारी सत्ता के रूप में प्रस्तुत करने की सतत प्रक्रिया है, जिसने साहित्य और समाज दोनों को गहराई से प्रभावित किया है।"5.

सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय साहित्य और समाज में नारी विमर्श की नींव सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में गहराई से जुड़ी हुई है। सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय समाज लंबे समय तक पितृसत्तात्मक संरचनाओं के अधीन रहा, जहाँ स्त्री को घरेलू परिधि, विवाह और मातृत्व तक सीमित रखा गया। बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा और दहेज जैसी कुप्रथाओं ने स्त्री की स्वतंत्र पहचान को कुंठित किया। सुधार आंदोलनों और स्वतंत्रता संग्राम के दौर में स्त्रियों की शिक्षा और सामाजिक भागीदारी पर बल दिया गया, जिसने नारी चेतना के बीज बोए। सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भारत की विविध भाषाएँ, धर्म और लोक परंपराएँ स्त्री की स्थिति को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करती रही हैं। एक ओर स्त्री को देवी, शक्ति और मातृत्व के रूप में पूजनीय माना गया, वहीं दूसरी ओर उसे पुरुष की छाया और परिवार की मर्यादा तक सीमित भी किया गया। साहित्य में यह द्वंद्व बार-बार उभरता है, जहाँ स्त्री को एक तरफ आदर्श रूप में महिमामंडित किया गया, तो दूसरी ओर उसकी वास्तविक स्थिति शोषित और उपेक्षित रही। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श का विकास औपनिवेशिक काल, सामाजिक सुधार आंदोलनों और स्वतंत्रता संग्राम से गहरे तौर पर जुड़ा है। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे सुधारकों ने स्त्रियों की स्थिति को बदलने का प्रयास किया और स्त्री-शिक्षा एवं विधवा पुनर्विवाह की राह खोली। स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी ने उन्हें सामाजिक और राजनीतिक मंच पर स्थापित किया, जिससे उनकी अस्मिता को साहित्य में नई अभिव्यक्ति मिली। स्वतंत्रता के बाद स्त्री विमर्श और भी सशक्त हुआ जब आधुनिक लेखन में स्त्री को आत्मनिर्भर, संघर्षशील और विद्रोही सत्ता के रूप में चित्रित किया गया। इस प्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य न केवल नारी विमर्श की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि स्त्री विमर्श भारतीय समाज की जटिलताओं और विविधताओं का परिणाम है, जिसने साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनाया।"6.

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

नासिरा शर्मा का साहित्यिक परिचय

1. प्रमुख जीवनवृत्त और लेखन यात्रा

हिंदी साहित्य की प्रख्यात कथाकार नासिरा शर्मा का जन्म सन् 1948 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में हुआ। एक मध्यमवर्गीय परिवार से आईं नासिरा शर्मा ने प्रारंभिक शिक्षा यहीं से प्राप्त की। उन्होंने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से की और आगे चलकर हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान स्थापित किया। नासिरा शर्मा न केवल हिंदी बल्कि फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा पर भी समान अधिकार रखती हैं। यही बहुभाषिक दक्षता उनके साहित्य में विविधता और गहराई लाती है। उनका साहित्यिक जीवन लगभग पाँच दशकों से अधिक का है, जिसमें उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध और पत्रकारिता सभी क्षेत्रों में सक्रिय योगदान दिया है। उनकी लेखनी में भारतीय समाज की बहुरंगी छवियाँ मिलती हैं, जो ग्रामीण और शहरी दोनों ही परिवेश से जुड़ी हुई हैं।

नासिरा शर्मा की विशेषता यह है कि उन्होंने अपने साहित्य को केवल भारत तक सीमित नहीं रखा, बल्कि मध्य-एशिया और अंतरराष्ट्रीय राजनीति एवं समाज पर भी अपनी पैनी दृष्टि डाली। उनके लेखन में विदेश यात्राओं और विभिन्न देशों के अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। उनकी ख्याति एक ऐसी लेखिका के रूप में है जो सामाजिक मुद्दों, मानवीय संवेदनाओं और स्त्री-अस्मिता को समान रूप से महत्व देती हैं। उनके प्रमुख उपन्यासों में *परिजात, पत्थर गली, ठीकरे की मँगनी, शाल्मली, कागज़ की नाव, पारिजात* और *ज़िंदा मुहावरे* शामिल हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री जीवन के यथार्थ को स्वर देती हैं और पाठकों को सामाजिक असमानताओं की गहरी पड़ताल करने पर विवश करती हैं। नासिरा शर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जो उनके रचनात्मक योगदान की प्रमाणिकता को सिद्ध करते हैं।

2. उनकी कहानियों का विषय-वस्तु (सामाजिक यथार्थ, स्त्री के संघर्ष, अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण)

नासिरा शर्मा की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। वे समाज में व्याप्त असमानताओं, साम्प्रदायिक तनावों, वर्गभेद और स्त्री-पुरुष संबंधों की विसंगतियों को बड़ी ही सहजता से उजागर करती हैं। उनकी कहानियों में पात्र आम जनजीवन से जुड़े होते हैं, जिनके माध्यम से वे व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों को सामने लाती हैं। घरेलू हिंसा, विवाह संस्था की विसंगतियाँ, दहेज-प्रथा, स्त्रियों पर होने वाला शोषण और पितृसत्ता की जकड़न उनके कथानक का अभिन्न हिस्सा हैं। वे न केवल स्त्रियों की पीड़ा को उभारती हैं, बल्कि उनके संघर्ष, प्रतिरोध और

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

आत्मनिर्णय की यात्रा को भी सामने रखती हैं। इस दृष्टि से उनकी कहानियाँ मात्र शोषण का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि उसमें मुक्ति और आत्मसत्ता की तलाश भी दिखाती हैं।"7.

इसके अतिरिक्त नासिरा शर्मा की कहानियों की एक विशेषता उनका अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण है। उन्होंने ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इराक़ जैसे देशों की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों को भी अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। मध्य-एशियाई समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनके संघर्ष और वहां के राजनीतिक उथल-पुथल को उन्होंने गहराई से चित्रित किया है। इस प्रकार, उनका साहित्य सीमाओं से परे जाकर मानवीय संवेदनाओं का दस्तावेज़ बनता है। उनके पात्र भारतीय ही नहीं बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं, जिससे उनकी कहानियों का दायरा और भी व्यापक हो जाता है। यह वैश्विक दृष्टि उन्हें हिंदी की अन्य महिला कथाकारों से अलग बनाती है और उनके लेखन को अधिक समकालीन और प्रासंगिक स्वरूप प्रदान करती है।

3. नारी-चेतना की विशेषताएँ

नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी-चेतना अत्यंत सशक्त और स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है। वे स्त्री को केवल पीड़िता के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसे संघर्षशील, आत्मनिर्भर और समाज की जटिल परिस्थितियों से जूझने वाली सक्रिय हस्ती के रूप में रेखांकित करती हैं। उनकी कहानियों की नायिकाएँ अपनी अस्मिता और स्वतंत्रता के लिए निरंतर प्रयासरत रहती हैं। वे पारंपरिक बंधनों को चुनौती देती हैं और आत्मनिर्णय की ओर अग्रसर होती हैं। नासिरा शर्मा का स्त्री दृष्टिकोण संतुलित है—वे स्त्री के दुख और शोषण का चित्रण करते हुए भी उसे आशाहीन या निष्क्रिय नहीं दिखातीं। बल्कि वे स्त्रियों में आत्मविश्वास, विद्रोह और परिवर्तन की चेतना जगाती हैं।"8.

उनकी कहानियों में नारी-चेतना का यह स्वर घरेलू स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक फैला हुआ है। उदाहरण के लिए, भारतीय समाज में स्त्री का संघर्ष दहेज, घरेलू हिंसा और लैंगिक असमानता से जुड़ा है, जबकि मध्य-एशियाई समाजों में स्त्री का संघर्ष धार्मिक कट्टरता, युद्ध और राजनीतिक अस्थिरता से प्रभावित है। इस प्रकार, नासिरा शर्मा नारी-चेतना को बहुआयामी दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं। उनकी लेखनी यह संदेश देती है कि स्त्री केवल पारिवारिक ढांचे में बंधी हुई नहीं है, बल्कि वह अपनी पहचान बनाने और समाज में बदलाव लाने की क्षमता रखती है। इस दृष्टिकोण से वे हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा प्रदान करती हैं। नासिरा शर्मा की कहानियाँ स्त्री को आवाज़ देती हैं और उसे समाज के केंद्र में स्थापित करती हैं, जिससे उनकी रचनाएँ नारी विमर्श की अनिवार्य धारा बन जाती हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

कृष्णा सोबती का साहित्यिक परिचय

1. साहित्यिक जीवन और लेखन की प्रमुख विशेषताएँ

हिंदी साहित्य की महान कथाकार कृष्णा सोबती का जन्म 18 फ़रवरी 1925 को गुजरात (पाकिस्तान) में हुआ और उनका जीवनकाल लगभग एक शताब्दी तक फैला रहा। 2019 में उनके निधन तक वे हिंदी साहित्य की सबसे सशक्त, निर्भीक और स्वतंत्र सोच रखने वाली लेखिकाओं में गिनी जाती रही हैं। कृष्णा सोबती ने विभाजन के दर्दनाक अनुभव को बहुत गहराई से जिया और उसी ने उनके लेखन को संवेदनशील, यथार्थपरक और विद्रोही दृष्टि प्रदान की। "9 उनकी लेखनी का आरंभ कहानियों से हुआ, लेकिन आगे चलकर उन्होंने उपन्यास और संस्मरण जैसी विधाओं में भी अपनी रचनात्मकता दिखाई। *दार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, सूरजमुखी अंधेरे के, ज़िंदगीनामा, डार से बिछुड़ी, समय सरगम* जैसे उपन्यास और कहानियाँ उन्हें हिंदी साहित्य में अमिट स्थान दिलाते हैं।

उनके साहित्यिक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने परंपरागत स्त्री-छवि को तोड़ते हुए स्त्री को उसके वास्तविक, जटिल और जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। वे रूढ़ियों और बनावटी आदर्शों के विरुद्ध लिखने से कभी नहीं हिचकिचाईं। इसी कारण वे नारी चेतना और आधुनिक हिंदी साहित्य की अग्रणी हस्तियों में गिनी जाती हैं।.

2. उनकी कहानियों में स्त्री की अस्मिता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक प्रश्न

कृष्णा सोबती की कहानियों का केंद्र बिंदु स्त्री का जीवन, उसकी अस्मिता और आत्मनिर्भरता की खोज है। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ पारंपरिक भूमिका से बाहर निकलकर अपनी शर्तों पर जीवन जीने का प्रयास करती हैं।"10 .*मित्रो मरजानी* इसका श्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ एक स्त्री अपनी यौनिक इच्छाओं और जीवन जीने के अधिकार को खुलकर स्वीकार करती है। यह उस समय के समाज के लिए एक साहसिक और विद्रोही स्वर था, जब स्त्री को इच्छाओं से रहित, त्याग और सहनशीलता का प्रतीक माना जाता था।

उनकी कहानियों में स्त्री केवल 'अन्याय की शिकार' नहीं है, बल्कि वह प्रतिरोध करती है, अपने अधिकारों के लिए खड़ी होती है और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होती है। विभाजन, विस्थापन और सामाजिक असमानताओं का अनुभव भी उनके लेखन में प्रखर रूप से दिखाई देता है। वे केवल स्त्री की व्यक्तिगत पीड़ा का ही चित्रण नहीं करतीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं और पितृसत्ता की जकड़नों पर तीखा प्रहार करती हैं। उनकी नायिकाएँ आत्मविश्वासी हैं, जिजीविषा से भरी हैं और समाज द्वारा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

थोपे गए आदर्शों को चुनौती देती हैं। कृष्णा सोबती ने स्त्री को देह, मन और आत्मा के समन्वित रूप में देखा है, और इसीलिए उनकी कहानियाँ स्त्री विमर्श के लिए एक जीवंत और गहरी संवेदनशीलता लेकर आती हैं।

3. भाषा-शैली और वैचारिक योगदान

कृष्णा सोबती की भाषा-शैली हिंदी साहित्य में उन्हें विशिष्ट बनाती है। उन्होंने बोली-बानी, लोक-भाषाओं और क्षेत्रीय संस्कृतियों को अपनी रचनाओं में बखूबी जगह दी। उनकी भाषा में एक तरफ सहजता और बोलचाल का प्रवाह है, तो दूसरी ओर गहरी साहित्यिकता और संवेदनशीलता भी। *ज़िंदगीनामा* इसका उत्तम उदाहरण है, जहाँ भाषा बहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिक परिवेश को प्रतिबिंबित करती है। उनकी शैली में व्यंग्य, विनोद और तीखा यथार्थ एक साथ देखने को मिलता है। वैचारिक दृष्टि से कृष्णा सोबती ने हिंदी साहित्य को स्त्री अस्मिता और स्वतंत्रता की एक नई परिभाषा दी। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि स्त्री मात्र परिवार की परिधि तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व और सोच है। उनका लेखन स्त्री को आत्मनिर्भर, साहसी और अपनी इच्छाओं को स्वीकार करने वाली सत्ता के रूप में स्थापित करता है।"11 उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्षशील स्त्री का ऐसा चित्रण किया, जो न केवल उस समय के साहित्य में क्रांतिकारी था बल्कि आज भी प्रासंगिक है। उन्हें *ज्ञानपीठ पुरस्कार* और *साहित्य अकादमी पुरस्कार* जैसे अनेक सम्मानों से नवाज़ा गया, जो उनके साहित्यिक योगदान की महत्ता को प्रमाणित करता है। कृष्णा सोबती का साहित्य केवल साहित्यिक उपलब्धि ही नहीं बल्कि सामाजिक हस्तक्षेप भी है। उन्होंने हिंदी साहित्य को साहसिक विषय-वस्तु, नई भाषा-शैली और स्त्री विमर्श की दिशा दी, जिससे वे हिंदी की महानतम साहित्यकारों में गिनी जाती हैं।

नासिरा शर्मा बनाम कृष्णा सोबती: नारी विमर्श का तुलनात्मक अध्ययन

1. स्त्री की सामाजिक स्थिति का चित्रण

नासिरा शर्मा और कृष्णा सोबती दोनों की कहानियाँ स्त्री की सामाजिक स्थिति का गहन चित्र प्रस्तुत करती हैं, परंतु उनके दृष्टिकोण और परिप्रेक्ष्य अलग हैं। नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री का जीवन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दबावों से प्रभावित दिखाई देता है। वे स्त्री को उस व्यवस्था के बीच चित्रित करती हैं जहाँ पितृसत्ता, वर्गीय असमानता और धार्मिक रूढ़ियाँ उसे जकड़ती हैं। उनकी नायिकाएँ गाँव-शहर के बीच संघर्ष करती हुई सामान्य स्त्रियाँ हैं, जो शोषण का सामना करते हुए भी अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जूझती हैं। दूसरी ओर, कृष्णा सोबती स्त्री की सामाजिक स्थिति को

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

गहरी मानवीय संवेदना और साहस के साथ प्रस्तुत करती हैं। उनके यहाँ स्त्री को केवल कमजोर या शोषित रूप में नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी और स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में देखा जाता है। वे स्त्री की दबी हुई इच्छाओं, आकांक्षाओं और उसकी जिजीविषा को केंद्र में रखकर उसे सामाजिक ढाँचे के भीतर सक्रिय भूमिका देती हैं। इस प्रकार जहाँ नासिरा शर्मा समाज की कठोर वास्तविकताओं को रेखांकित करती हैं, वहीं कृष्णा सोबती स्त्री के साहस और प्रतिरोध को केंद्र में रखती हैं।"12.

2. विवाह, परिवार और समाज में स्त्री की भूमिका

विवाह और परिवार नारी जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं, जिनमें दोनों लेखिकाओं का दृष्टिकोण उल्लेखनीय अंतर लिए हुए है। नासिरा शर्मा विवाह संस्था की विसंगतियों, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा और स्त्रियों पर थोपे गए पारिवारिक दायित्वों को आलोचनात्मक दृष्टि से देखती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री अक्सर परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व के बीच फँसी होती है, जहाँ उसे परिवार की मर्यादाओं और अपनी इच्छाओं के बीच संघर्ष करना पड़ता है। नासिरा शर्मा का फोकस यह दिखाना है कि स्त्री का जीवन परिवार और समाज की कठोर अपेक्षाओं से किस प्रकार प्रभावित होता है। दूसरी ओर, कृष्णा सोबती विवाह और परिवार को केवल सामाजिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि स्त्री की इच्छाओं और अस्मिता के संदर्भ में देखती हैं। *मित्रो मरजानी* जैसी रचनाएँ स्त्री की कामनाओं, उसकी यौनिकता और आत्म-अभिव्यक्ति को विवाह संस्था के भीतर सामने लाती हैं। सोबती विवाह को स्त्री के लिए केवल कर्तव्य या सामाजिक मर्यादा नहीं मानतीं, बल्कि उसे स्त्री की स्वतंत्रता और उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं से जोड़ती हैं। इस दृष्टि से वे विवाह और परिवार की रूढ़ परिभाषाओं को तोड़कर स्त्री को सक्रिय और स्वतंत्र सत्ता के रूप में स्थापित करती हैं।

3. स्त्री-स्वतंत्रता, आत्मसंकल्प और पितृसत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध

नारी विमर्श का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू स्त्री की स्वतंत्रता और पितृसत्ता के विरुद्ध उसका प्रतिरोध है, जिसे दोनों लेखिकाएँ अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत करती हैं। नासिरा शर्मा स्त्री के संघर्ष को सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से जोड़कर दिखाती हैं। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ केवल सहनशील नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के लिए जागरूक होती हैं और परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाती हैं। वे पितृसत्ता के दबावों का सामना करते हुए अपने आत्मसंकल्प को मजबूत करती हैं। नासिरा शर्मा के पात्र अक्सर समाज की जटिलताओं के बीच बदलाव की संभावना का प्रतीक बनते हैं। वहीं, कृष्णा सोबती का दृष्टिकोण आंतरिक और अधिक व्यक्तिगत है। उनकी नायिकाएँ पितृसत्ता को सीधे चुनौती देती हैं और अपनी इच्छाओं, यौनिकता और आत्मनिर्णय के अधिकार को दृढ़ता से स्वीकार करती हैं।"13 वे स्त्री

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

को पारंपरिक मानदंडों और नैतिकताओं की जकड़न से मुक्त कराती हैं। उनकी लेखनी में स्त्री केवल संघर्षरत नहीं, बल्कि विद्रोही और आत्मनिर्भर दिखाई देती है। इस प्रकार, जहाँ नासिरा शर्मा पितृसत्ता का प्रतिरोध सामाजिक यथार्थ के स्तर पर करती हैं, वहीं कृष्णा सोबती उसे स्त्री के आंतरिक साहस और स्वायत्त इच्छाशक्ति से तोड़ती हैं। दोनों ही दृष्टियाँ मिलकर हिंदी साहित्य में नारी चेतना और विमर्श को नई दिशा देती हैं।.

साहित्य समीक्षा

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के उद्भव, विकास और विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने के लिए उपलब्ध अनुसंधानों और आलोचनात्मक साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। इस संदर्भ में प्रस्तुत संदर्भ सूची विविध आयामों को उजागर करती है। सिंह (2019) ने हिंदी साहित्य में स्त्री विषय के उदय का विवेचन करते हुए यह स्पष्ट किया कि आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री केवल एक सहायक पात्र न रहकर केंद्र में आई है और उसकी अस्मिता तथा स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारा गया है। शर्मा (2008) ने दक्षिण एशिया की भाषाई विविधता और महिला लेखन पर विचार करते हुए दिखाया कि महिला लेखन ने भाषाई परिदृश्य में न केवल नए विमर्श खड़े किए बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को एक साझा नारीवादी दृष्टिकोण से जोड़ा। गर्ग (2013) ने साहित्य निर्माण में महिला लेखन को हस्तक्षेपकारी शक्ति के रूप में रेखांकित किया और यह तर्क दिया कि स्त्री लेखन ने साहित्य को केवल सौंदर्यबोध या भावुकता तक सीमित न रखकर सामाजिक संरचनाओं की आलोचना और बदलाव की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। क़दीर (2020) का कार्य *द साइलेंस दैट स्पीक्स* विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं की कहानियों पर केंद्रित है, जहाँ भारतीय मुस्लिम स्त्रियों के अनुभवों और उनकी कहानियों में निहित मूक प्रतिरोध को रेखांकित किया गया है, जो नासिरा शर्मा के लेखन से जुड़ने वाली दृष्टि प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार, इवांगेलिन (तिथि अज्ञात) ने *ग्लिम्प्सेस ऑफ़ वीमेन इन रीजनल-इंडियन फ़िक्शन* में भारतीय क्षेत्रीय कथा साहित्य में स्त्रियों की झलकियों का विश्लेषण कर यह स्पष्ट किया कि क्षेत्रीयता और लोकजीवन की पृष्ठभूमि में स्त्री की अस्मिता और संघर्ष का चित्रण किस प्रकार विविध रूपों में सामने आता है।

कृष्णा सोबती पर हुए शोध साहित्य का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनके लेखन को मुख्यतः नारीवादी दृष्टिकोण से पढ़ा गया है। राणा (2012) ने अपने अध्ययन में कृष्णा सोबती के उपन्यासों का नारीवादी दृष्टि से विश्लेषण करते हुए महिला पात्रों की स्वायत्तता, विद्रोह और सामाजिक संरचना के भीतर उनकी अस्मिता की तलाश को रेखांकित किया। रेखा (2009) ने लैंगिक अंतर पर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

पुनर्विचार करते हुए कृष्णा सोबती के उपन्यासों का विश्लेषण किया और यह दिखाया कि सोबती ने स्त्री-पुरुष संबंधों की रूढ़ छवियों को तोड़ा और स्त्री को एक स्वतंत्र सोच वाली सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया। इसी धारा में कुबावत (2019) ने कृष्णा सोबती को एक नारीवादी लेखिका के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया और उनके चुनिंदा उपन्यासों के आलोक में उनके लेखन के वैचारिक व संवेदनात्मक पक्ष को उजागर किया। यह अध्ययन बताता है कि सोबती की स्त्री न केवल समाज की जकड़नों से मुक्ति चाहती है, बल्कि वह आत्मनिर्भर और अपनी शर्तों पर जीवन जीने का संकल्प भी रखती है।. (गर्ग, एम,2013).

इन सभी शोधों और समीक्षाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श एक बहुआयामी धारा है, जहाँ नासिरा शर्मा जैसी लेखिकाएँ स्त्री के सामाजिक यथार्थ, लैंगिक असमानताओं और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपनी कहानियों में प्रस्तुत करती हैं, वहीं कृष्णा सोबती जैसी रचनाकारें स्त्री की इच्छाओं, अस्मिता और विद्रोही स्वभाव को कथानकों का केंद्र बनाती हैं। समीक्षा यह भी दर्शाती है कि महिला लेखन केवल साहित्यिक सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक आलोचना, प्रतिरोध और परिवर्तन का भी माध्यम है। इस प्रकार उपलब्ध साहित्य न केवल शोध के लिए पृष्ठभूमि तैयार करता है बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि नासिरा शर्मा और कृष्णा सोबती की कहानियाँ स्त्री विमर्श को दो अलग लेकिन परस्पर पूरक आयाम प्रदान करती हैं। उनके लेखन से यह भी सिद्ध होता है कि हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श केवल व्यक्तिगत पीड़ा का आख्यान नहीं है, बल्कि सामाजिक अन्याय, पितृसत्ता और असमानता के खिलाफ़ एक सशक्त प्रतिरोध है, जो स्त्री को अपनी स्वतंत्र सत्ता और आत्मसंकल्प की ओर अग्रसर करता है।

निष्कर्ष

नासिरा शर्मा और कृष्णा सोबती की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि हिंदी साहित्य में नारी विमर्श बहुआयामी और विविध रूपों में अभिव्यक्त हुआ है। दोनों लेखिकाएँ स्त्री की अस्मिता, संघर्ष और आत्मनिर्णय के प्रश्नों को केंद्र में रखती हैं, परंतु उनकी दृष्टि और प्रस्तुति में विशिष्ट भिन्नताएँ दिखाई देती हैं। नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री का जीवन व्यापक सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों से जुड़ा हुआ है, जहाँ विवाह संस्था की विसंगतियाँ, घरेलू हिंसा, आर्थिक विषमता और धार्मिक-सांस्कृतिक बंधन उसकी स्थिति को जटिल बनाते हैं। वे स्त्री को सामाजिक संरचनाओं और वर्गीय असमानताओं से जूझती हुई, परंतु परिवर्तन की आकांक्षा रखने वाली सत्ता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इसके विपरीत, कृष्णा सोबती स्त्री की आंतरिक दुनिया, उसकी संवेदनाओं, इच्छाओं और

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

आत्मअभिव्यक्ति पर बल देती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री केवल कर्तव्यनिष्ठा और त्याग की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि अपनी यौनिकता, स्वतंत्रता और आत्मसंकल्प को पहचानने और स्वीकारने वाली विद्रोही सत्ता है। नासिरा शर्मा पितृसत्ता के विरुद्ध सामाजिक यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रतिरोध करती हैं, जबकि कृष्णा सोबती पितृसत्ता को स्त्री के आंतरिक साहस और विद्रोही स्वर से चुनौती देती हैं। दोनों लेखिकाओं की कहानियों में विवाह, परिवार और समाज में स्त्री की भूमिका का चित्रण मिलता है, परंतु नासिरा शर्मा इसे पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों की पृष्ठभूमि में दिखाती हैं, वहीं कृष्णा सोबती इसे स्त्री की इच्छाओं और अस्मिता से जोड़ती हैं। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो दोनों की रचनाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं—एक ओर सामाजिक यथार्थ की कठोर सच्चाइयों का उद्घाटन, तो दूसरी ओर स्त्री की व्यक्तिगत आकांक्षाओं और स्वतंत्रता की निर्भीक घोषणा। इस प्रकार, इनकी कहानियाँ मिलकर नारी विमर्श को गहराई और व्यापकता दोनों प्रदान करती हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा और कृष्णा सोबती ने अपने लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य को न केवल नई स्त्री-दृष्टि दी, बल्कि पितृसत्तात्मक समाज की जकड़न को चुनौती देकर नारी चेतना को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में भी ऐतिहासिक योगदान दिया।

संदर्भ

1. "सिंह, एस. (2019). हिंदी साहित्य में स्त्री विषय का उदय. भारतीय साहित्य, 63(2 (310), 28-33".

2. "शर्मा, आर. सी. (2008). दक्षिण एशिया में भाषाएँ, भाषाई विविधता और महिला लेखन. 14(1), 355-402".

3. "गर्ग, एम. (2013). साहित्य निर्माण में महिला लेखन का हस्तक्षेप. भारतीय साहित्य, 57(4 (276), 181-190".

4. "राणा, जे. (2012). चयनित साहित्य में महिला पात्रों का एक अध्ययन कृष्णा सोबती के उपन्यास: एक नारीवादी दृष्टिकोण। SSRN 2393850 पर उपलब्ध।"

5. "रेखा. (2009)। लैंगिक अंतर पर पुनर्विचार: कृष्णा सोबती के उपन्यासों का एक पाठ। भारतीय साहित्य, 163-191।"

6. "कुबावत, आर. (2019)। एक नारीवादी लेखिका के रूप में कृष्णा सोबती का अध्ययन: उनके चुनिंदा उपन्यासों के आलोक में।"

7. "लाल, एस. बी., और यादव, आर. कृष्णा सोबती के चुनिंदा उपन्यासों में महिला चरित्र प्रस्तुति।"

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

8. "सिंह, एस., और कौल, आर. (2021)। ओस पर चलना: कृष्णा सोबती की पुस्तक लिसन गर्ल! का एक नारीवादी पाठ। कृष्णा सोबती में (पृष्ठ 147-156)। रूटलेज इंडिया।"

9. "मौर्य, के. के. (2021)। हिंदी कथा साहित्य में स्त्री की छवि: कृष्ण की एक रूपरेखा सोबती के चुनिंदा उपन्यास अनुवादित। द क्रिएटिव लॉन्चर, 5(6), 101-110।"

10. "सेठी, आर., और सिन्हा, वी. (2021)। कृष्णा सोबती के उपन्यासों में देह और कामुकता। कृष्णा सोबती में (पृष्ठ 138-146)। रूटलेज इंडिया।"

11. "सिंह, एस. (2019)। हिंदी साहित्य में स्त्री विषय का उदय। भारतीय साहित्य, 63(2 (310), 28-33।"

12. "सिन्हा, वी. (2021)। कृष्णा सोबती: धैर्य और गरिमा की कीमिया। कृष्णा सोबती में (पृष्ठ 131-137)। रूटलेज इंडिया।"

13. "चानना, के. (2005)। आधुनिक भारतीय महिला लेखकों में कामुकता के दमनकारी मॉड्यूल की खोज: नमिता गोखले, कृष्णा सोबती और इस्मत चुगताई। भारतीय साहित्य, 49(6 (230), 162-176".